

# Trigunatmika

Date : 30th March 1975  
Place : Mumbai  
Type : Seminar & Meeting  
Speech : Hindi  
Language

## CONTENTS

### I Transcript

Hindi	02 - 07
English	-
Marathi	-

### II Translation

English	-
Hindi	-
Marathi	-

# ORIGINAL TRANSCRIPT

## HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari

कल मैंने आपसे बताया था, सबको सुनाई दे रहा है या नहीं ? पीछे में सुनाई दे रहा है ? आपसे मैंने यह बताया था कि मनुष्य का शरीर उसका मन, उसकी बुद्धि, आदि उसका जितना भी पूरा व्यक्तित्व है, उसकी जितनी भी personality है वह सब कुछ तीन तरह के शक्ति से बना हुआ है। एक शक्ति जिससे कि हम अस्तित्व बनकर रहते हैं। वह मनुष्य में प्राण स्वरूप होती है जिसका स्थान हृदय में होता है। दूसरी शक्ति जो कि हमारे पेट में होती है जिसके कारण हमारी आज मनुष्य दशा तक उत्क्रान्ति हुई है, वह है धर्म। और तीसरी शक्ति जो एक चेतनामय है जिससे हमें बुद्धि आदि अनेक चेतना के अवलम्बन मिले हैं। लेकिन यह तीनों ही शक्तियाँ सर्वव्यापी परमात्मा के प्रेम से पाई जाती हैं। परमात्मा बन सर्वव्यापी प्रेम इन तीनों शक्तियों को संचालित करता है, समग्र बनाता है, माने integrate कर देता है। जैसे कि जड़ वस्तु में भी जो vibrations दिखाई देते हैं, जिसे electromagnetic vibrations कहते हैं, वो भी उसी स्थिति स्वरूप, प्राण का ही सोया हुआ स्वरूप है। जब वह जाग जाता है तब वह प्राण हो जाता है। जो एक छोटे से amoeba में पेट में भूख लगती है, वही मनुष्य के अन्दर में धर्म के रूप में जागृत हो जाती है। धर्म हर एक वस्तु मात्र में है। जैसे कि मैंने आपसे बताया था कि सोने का धर्म यह नहीं है कि वह पीला है। उसका धर्म यह भी नहीं है कि उससे आप जेवर बना सकते हैं। लेकिन सोने का धर्म यह है कि वह किसी भी हालत में tarnish नहीं होता, खराब नहीं होता। अब जो तीसरी चीज़ है चेतना, वो मनुष्य में, मनुष्य के मस्तिष्क में, सबसे

अधिकतर प्रगल्भ है, developed है। मनुष्य पूरी तरह से इन तीन शक्तियों में पूर्णतया mature हो गया है, बड़ा हो गया है। अब उसकी तैयारी हो गयी है कि उन तीनों शक्तियों का संचय, जो एक शक्ति परमात्मा का प्यार है उनका प्रेम है उसे जाने। जो एक शक्ति ही तीनों में बंट गई है वो एकाकार हो जाए, उस परम शक्ति का एक थोड़ा सा अंश हमारे अन्दर कुण्डलिनी के रूप में त्रिकोणाकार अस्थि में सोया हुआ रहता है। जिस वक्त कोई भी ऐसा इन्सान जिसने इस प्रेम को अपने अन्दर ले लिया हो और जिसके अन्दर यह शक्ति से समग्र होकर integrate हो बह रही हो, माने कि जो आदमी realised soul हो, वह किसी साधक के रूप पर अनुग्रह करता है तभी कुण्डलिनी, आपकी माँ, जागृत होती है। लेकिन वैसा साधक अगर सोचे कि नहीं मैं ही अपनी कुण्डलिनी जागृत करूँगा तो वैसी ही बात हुई है कि जो गाड़ी चलाना नहीं जानता है वह मोटर चला रहा है। जिसको मोटर चलाना नहीं आता है ऐसा अगर आदमी मोटर चलाए तो मोटर का कचरा बन जाता है। इसी प्रकार जो लोग अपनी कुण्डलिनी स्वयं जागृत करना चाहते हैं तो वे अपनी सारी ही कुण्डलिनी की संस्था को उसके सारे instrument को पूरी तरह नष्ट भ्रष्ट कर देते हैं। अगर कोई अन्जान आदमी इस कुण्डलिनी को जगाना चाहता है तब भी यही हो जाता है। कोई अगर अपवित्र आदमी आपकी माँ के ओर अग्रसर होता है और उसको जगाना चाहता है तब भी ऐसा ही हो जाता है। और कोई अगर आदमी आपको पैसे के लिए, आपको लूटने के लिए, आपको

बेवकूफ बनाकर के कुण्डलिनी पर हाथ डालता है तब भी यही काम हो जाता है। वही इन्सान जो परमात्मा के प्रेम की सर्वव्यापी शक्ति से पूरी तरह प्लावित हो, जिसके अन्दर सामूहिक चेतना पूरी तरह से बह रही हो, इस बात का अधिकारी है कि कुण्डलिनी पर आमन्त्रण का आरोप करे। कुण्डलिनी का आमन्त्रण ऐसे वैसे आदमी भेज नहीं सकते। और जो इस तरह से भददे प्रयत्न करते हैं वह बड़े भारी पाप के भागीदार हो जाते हैं। जो दूसरे की कुण्डलिनी नष्ट कर देते हैं, उनकी स्वयं की कुण्डलिनी जन्म जन्मांतर के लिए नष्ट हो जाती है और वे कीड़े मकोड़े के जन्म लेते हैं। इसलिए कुण्डलिनी के साथ खेलने का साहस कभी न करें। बाकी सब चीजों में ठीक है आप चोरी करिए, आप smuggling करिए कोई हर्ज नहीं लेकिन आप कुण्डलिनी के मामले में मेहरबानी से दूर रहिए। कुण्डलिनी को जागृत करने का अधिकार परमात्मा के सिवाय और कोई नहीं दे सकता। जब तक स्वयं परमात्मा की शक्ति इसका अधिकार आपको न दे तब तक यह आपके पास अधिकार नहीं है कि आप college में जाकर इसकी degree ले लें और कहें कि हम कुण्डलिनी जागृत कर सकते हैं इस तरह के झूठे बहुत लोग आजकल संसार में दिखाई दे रहे हैं और वे जान नहीं रहे हैं कि हम कितना बड़ा घोर, अत्यन्त भयंकर पाप कर रहे हैं। कुण्डलिनी का काम अत्यंत कुशलतापूर्वक करना पड़ता है। इतना ही नहीं अत्यंत प्रेमपूर्वक करना पड़ता है और सबसे बड़ी बात है कि वह प्रेम भी अत्यंत पवित्र होना पड़ता है। पवित्रता यह धर्म के रोम-रोम में छाई हुई शक्ति। जो आदमी पवित्र नहीं होता है, जो दूषित विचारों से भरा रहता है, जिसका सारा चित्त दूसरों का पैसा, दूसरों की पत्नी या दूसरों को लूटने की ओर होता है ऐसे

आदमी को चाहिए कि वह अपना समय और किसी कार्य में लगाए लेकिन कुण्डलिनी के ऊपर अपना हाथ न रखे। कुण्डलिनी जितनी सौम्य है जितनी कृपालु है, जितनी वरदायनी है, जितनी मातृ हृदय से प्लावित है उतने ही उसको संभालने वाले गण, deity जो कि उसकी रक्षा करते हैं, वह प्रखर और तेजोमय हैं। किसी भी प्रकार का खेल जब कुण्डलिनी के साथ होता है, तो वह पूरी तरह से कुण्डलिनी की रक्षा में तत्पर रहते हैं और ऐसे लोगों को नष्ट भ्रष्ट कर देते हैं। जो इस तरह का पाप करते हैं। सबसे बड़ा पाप, संसार में यही है कि किसी साधक की कुण्डलिनी अनाधिकार चेष्टाओं से घायल करना। इससे बढ़कर कोई भी पाप संसार में नहीं है। माँ की हत्या से भी बढ़कर यह पाप है कि आप किसी की कुण्डलिनी को हाथ लगा रहे हैं अनाधिकार चेष्टा से।

परमात्मा ने यह सारी सृष्टि अपने प्रेम से बनाई हुई है और उसे पवित्रता से भरा हुआ है। यह सारी सृष्टि अत्यन्त पवित्र है। उसमें जो कुछ भी अधर्म है और बुरा है वह मनुष्य ने ही संचित किया हुआ है। क्योंकि मनुष्य ही ऐसा जीव संसार में बनाया गया जो स्वतन्त्र है। बाकी सारी ही सृष्टि परमात्मा के इशारे पर नाचती है। एक पत्ता भी उनके इशारे के बिना नहीं हिलता। सारी सृष्टि में जो अधर्म से अधर्म है, जो नर्क से नर्क है जो पाप से बढ़कर पाप है, वह मनुष्य का ही बनाया हुआ है। इसकी रचना मनुष्य ही ने की है और ऐसे ही गिरे हुए अधर्म लोग जब अधर्माधम की स्थिति में पहुँच जाते हैं तब वे शैतान के रूप में विचरण करने लग जाते हैं। शैतान परमात्मा ने नहीं बनाया, उसको मनुष्य ने बनाया है और वह शैतान की पूजा करते हैं क्योंकि उसने ही उसकी रचना की है। जब तक हम शैतान को शैतान नहीं कहेंगे, जब तक हम अधर्म को



अधर्म नहीं कहेंगे, जब तक हम बुराई को बुराई नहीं कहेंगे, तब तक हमारे अन्दर अच्छाई जागृत नहीं हो सकती। आपने सुना होगा कि जब लोग मक्का जाते हैं तब रास्ते में एक वहाँ शैतान की मूर्ति बनाकर बिठाई गई है और सब लोग अपने घर से एक पुरानी चप्पल लेकर वहाँ जाते हैं और पहले शैतान को मारते हैं, माने कि उसको धिक्कारते हैं। उसको धिक्कारे बगैर परमात्मा आप को स्वीकार ही नहीं करने वाले और उनके स्वीकारे बगैर कुछ भी आप को नहीं मिलने वाला, आप चाहे कुछ भी कर लीजिए। उनकी मेहर आप पर होनी चाहिए, उनकी दया आप पर होनी चाहिए, उनका प्रेम आपकी ओर उमड़ना चाहिए। वह अत्यंत दयालु, करुणामय शक्तिमान प्रभु परमेश्वर हैं। लेकिन अगर आप अधमाधम कार्य में बैठे हुए हैं और आप उस शैतान की पूजा कर रहे हैं जिसने संसार में एक अजीब तरह का चक्र चला दिया है, जिसने अधर्म का एक चक्र चलाया हुआ है और जिसके बहुत सारे अनुचर संसार में पैदा होकर अधर्म को फैला रहे हैं, जब तक उस शैतान को तुम पूरी तरह से धिक्कार नहीं करेंगे तब तक परमात्मा भी आपको स्वीकार नहीं करेगा। इस मामले में अगर आधा अधूरापन है आपके अन्दर, तो अपने ही साथ छल कपट कर रहे हैं। उसको आपको पूरी तरह से आपको धिक्कारना होगा। उसको पूरी तरह से आपको छोड़ना होगा नहीं तो जो आपके अन्दर में मिथ्या है वह आपके अन्दर में बैठा रहेगा जो सत्य आपके अन्दर है वह प्रकट नहीं होगा। जब तक आपके अन्दर सत्य प्रकट नहीं होगा, संसार में भी सत्य कैसे फैल सकता है। जैसे समझ लीजिए कि सूर्य पर अगर बादल छा जाएं तो अन्धेरा आ जाता है और अगर बादल हट जाएं तो सूर्य फिर से चमकने लग जाता है। इसी प्रकार मनुष्य ने ही

अत्यन्त अधर्म कार्य करके जो शैतान तैयार किया हुआ है उस शैतान के बादल आज भी संसार के ऊपर इतनी बुरी तरह से मंडरा रहे हैं कि हो सकता है कि अगर सहज योग पूरी तरह से न पनप पाया तो वह दिन दूर नहीं जबकि इन लोगों का सबका सर्वनाश हो जाए और अन्धकार के गर्म में हम डूब जाएं। उस अन्धकार में भी सहजयोग में जिन जीवों ने परम कार्य किये हुए हैं वो सितारों जैसे चमकेंगे, सितारों जैसी उनकी महिमा होगी। यह वह बड़ा आपका स्थान है। आज आप इसको समझ नहीं पा रहे हैं लेकिन इतिहास में इस बात की चर्चा होगी कि कितने सहजयोगियों ने सत्य पर अपने पैर जमा लिए थे।

आधा अधूरापन छोड़ दीजिए छोटी-छोटी बातों की ओर उलझने की जरूरत नहीं है। आप बहुत बड़ी चीज पर जमे हुए हैं। इतनी बड़ी चीज पर जमने वाले लोगों को चाहिए कि छोटी मोटी चीजों की ओर बिल्कुल भी ध्यान न दें। आपके अन्दर की भी शक्ति आपकी स्वयं की तैयारी पर ही प्रभावित होती है। अगर आपकी तैयारी कम हो तो वह शक्ति भी हल्का ही अपना जोर दिखायेगी। अगर आपकी तैयारी पूरी तरह से है और शैतान को पूरी तरह से धिक्कारने की आपके अन्दर शक्ति है तो आप ही में से बड़े-बड़े सन्त और गुरुजन निकलने वाले हैं। एक बड़ी भारी पीढ़ी आज जन्म ले रही है। पाँच साल के बच्चे से लेकर आज ऐसे नवोदित बहुत बड़े-बड़े जीवों ने एकदम से संसार में जन्म ले लिया है जैसे कि ऊपर से कहीं से सारा उनका पूरा तबका इकट्ठा ही उतर आया हो। बहुत से बच्चे, मैं देखती हूँ कि वह पार ही पैदा हुए हैं। पर नीव के पत्थर तो आप ही हैं। सहजयोग के नीव के पत्थर आप लोग हैं। आपको मैंने पहले भी अनेक बार बताया है कि जो लोग आज धर्म के झूठे

झगड़े खड़े किए हुए हैं, जो आपस में नफरत से एक दूसरे को देख रहे हैं और उसमें धर्म का नाम इस्तेमाल कर रहे हैं, यह शैतान के बच्चे हैं, ये परमात्मा के भेजे हुए लोग नहीं हैं। परमात्मा ने कभी भी द्वेष व दुष्टता को मान्यता नहीं दी है। लेकिन उसका खण्डन किया है उसका संहार किया है। जो लोग अपने को बहुत छोटे दायरे में बाँधे हुए हैं कि हम फलाने हैं और दिकाने हैं, वो लोग अनन्त की गोद में नहीं जा सकते। जिसकी कोई सीमा नहीं है वह असीम में बैठा हुआ है। अपनी सीमाएं आपको तोड़नी पड़ेंगी जो आपने मूर्खता से बाँधी हैं। कोई भी धर्म आपको सीमा में नहीं बाँधना चाहता है लेकिन जो मनुष्य ने मूर्खों जैसे धर्म बनाए हैं उसका तो कोई इलाज ही नहीं कर सकते।

वास्तव में दो ही धर्म संसार में हैं— एक है धर्म और दूसरा है अधर्म। तीसरा कोई धर्म है ही नहीं। एक है धर्म जिसकी धारणा अन्दर होती है और दूसरा है अधर्म। जितने बड़े-बड़े गुरुजन हो गए हैं वह धर्म के लिए लड़े और उस वक्त जो अधर्म में थे उनसे लड़ते रहे — फिर उसका नाम आप मुसलमान कहिए, चाहे उनका नाम आप हिन्दु कहिए, चाहे उनका नाम आप Christian कहिए। लेकिन उनके जितने भी followers थे, अनुयायी थे उन लोगों में वो सत्यता नहीं थी। उन्होंने अपने छोटे-छोटे group बना लिए और अधर्म के झगड़े होने लगे। एक अधर्म से दूसरा अधर्म लड़ने लगा। धर्म में झगड़ा कोई नहीं होता है। धर्म में कलह नहीं होता है। धर्म सब एक हैं। सबके अन्दर एक है। सबमें एक ही बैठता है। उसमें कोई argument नहीं होता है। जब आप लोग किसी की ओर हाथ करके खड़े होते हैं तो सभी बताएंगे कि माँ इस आदमी से हमें यहाँ जलन आ रही है, माने उसका

आज्ञा चक्र पकड़ा हुआ है। सबके सब बताएंगे, एक फर्क नहीं बताएगा, दूसरा फर्क नहीं बताएगा। जो कोई भी इस हॉल के इस छत को देखेगा तो यह बताएगा कि यह छत सफेद रंग का है दूसरा रंग नहीं बता सकता है। जब आप हँसेंगे तो एक ही ढंग से हँसते हैं, जब आप रोएंगे तो आपकी आँख से आँसू आएंगे और एक ही ढंग से आप रोएंगे। उससे भी कितना अधिक धर्म का अपना स्वरूप है जो कि व्यापक है और सबके अन्दर एक है। उस धर्म में झगड़ा होना सम्भव ही नहीं हो सकता, कलह होना सम्भव ही नहीं हो सकता। कलह जहाँ आया समझ लीजिए कि एक अधर्म दूसरे अधर्म से लड़ रहा है। धर्म कभी धर्म के साथ लड़ नहीं सकता। जो आदमी अपने को धार्मिक कहकर के और दूसरे को कहता है कि आप भी धार्मिक, हम भी धार्मिक लेकिन लड़ लें, वो धर्म को जानता नहीं। सहजयोग में यह किस तरह से होता है, यह समग्रता कैसे आती है ? कुण्डलिनी का उद्दीपन कैसे होता है ? 'आदि, सभी कुछ आपको पहले भी बताया है और फिर भी मैं आपको बताऊँगी किसी वक्त। लेकिन यह तो देखने का मजा है जब आप खुद ही इस शक्ति को पा लेते हैं जबकि पहली शक्ति, जो कि आपके हृदय में है जिससे आपके प्राण हैं, वह प्रेम हो जाती है, और जो आपके पेट में धर्म है वह सारे संसार की जागृति हो जाती है। और जो आपकी चेतना आपके सर में है वो सारे संसार का ज्ञान हो जाता है। उसी वक्त आप जान सकते हैं कि यह कुण्डलिनी का उद्दीपन आपके इन हाथों से कैसे हो रहा है। आप ही के इशारों से कुण्डलिनी कैसे उठ रही है और आप ही के बंधनों में ये अधर्म कैसे चरमरा रहा है। और आप ही के खींचे हुए तारों में यह किस तरह से मरा जा रहा है। आप ही देख सकते हैं कि आप के जो दो चार



तीर कमान इस अधर्म को लग जाएं कि यह किस तरह से अपना मार्ग छोड़ कर चला जाता है और कुण्डलिनी अपने रास्ते पे अपने आप साफ-साफ आ जाती है। किस प्रकार शरीर में छिपी हुई व्याधियाँ एक दम से नष्ट होकर के, कुण्डलिनी सामने ऊपर एक गंगा जैसे भागीरथ ले आए थे, उसी तरह से उतरती चली आती है। गंगा को लाने के लिए भगीरथ ने अनेक प्रयत्न किए थे और इस कुण्डलिनी को लाने के लिए भी मैंने अनेक प्रयत्न किए हुए हैं, पूर्व जन्म में भी और इस जन्म में भी। लेकिन अब इसका फल आप लीजिए क्योंकि आपके दरवाजे पे ही गंगा बह रही है। आपके इशारे पर कुण्डलिनी चलेगी। आप रास्ते चलते हुए लोगों को जागृति दे सकते हैं। आपके हाथ से अनेक cancer जैसे रोग ठीक हो जाते हैं यह बात सही है और होनी ही चाहिए, होते ही है। यह सब कैसे हो रहा है ? उसका कारण यह है कि आप उस सर्वव्यापी परमात्मा के प्रेम की शक्ति के अंग हो गए हैं जो आप इस्तेमाल कर रहे हैं। आपके अन्दर से वही शक्ति प्रवाहित हो रही है और आप उस शक्ति का कार्य कर रहे हैं। अब इसमें झगड़े का कौन सा सवाल उठता है ? क्या मेरा यह हाथ इस हाथ से हर समय झगड़ा करता रहता है ? जिस दिन यह झगड़ा शुरू हो जाएगा तो हम यह कहेंगे कि यह हाथ इससे अलग हो गया, यह कोई हमारा हाथ नहीं है। इसी प्रकार इस सर्वव्यापी शक्ति को हमारे अन्दर हम पा लेते हैं तो हम सर्वशक्तिमान हो जाते हैं। बहुत से लोगों को पहले भी यह शक्ति मिली है। बहुत कम लोगों को कहना चाहिए, क्योंकि जब मैंने पढ़ा जेन को, जेन छठी शताब्दी में जापान में शुरू हुआ था, और उसमें भी यही कुण्डलिनी जागरण का कार्यक्रम किया था निकिता माँ ने और कुल 26 आदमी छठी

century से लेकर अभी तक पार हुए हैं और अभी कम से कम तीन चार century से तो कोई पार ही नहीं हुआ है। और आप समझ सकते हैं कि यहाँ हजारों आदमी पार होते जा रहे हैं। बहुतों को हुआ है, किसी-किसी को नहीं भी होता है। लेकिन हो ही जाता है। आज तक ऐसा कोई नहीं है कि वह आता रहे और उसको न हो। जो भी आया यहाँ बैठा, उसने पाने का प्रयत्न किया, सब लोग पार हो गए। ऐसा हमें आज तक मालूम नहीं जो पार नहीं हुआ। लेकिन एक चीज़ जरूर तैयार करके आना चाहिए कि शैतान को आपको जूते मारने पड़ेंगे। शैतान को आपको पहचानना पड़ेगा, उसको आपको छुट्टी देनी पड़ेगी, उसको अपने हृदय से निकाल देना पड़ेगा। और कौन शैतान है और कौन परमात्मा है उसकी पहचान इन्हीं चैतन्य लहरियों से हो सकती है। अगर आपके पास नहीं है तो जिनके पास है उनकी बात सुनिए, जो इसको जानते हैं उनकी बात सुनिए। जिन्होंने इसको पड़ताला है उनकी बात सुनिए। इसी प्रकार आप जान सकेंगे कि कौन शैतान है और कौन धर्ममात्मा, कौन असली गुरु है और कौन नकली है। संसार में जैसे असली फूल होते हैं वैसे plastic के भी फूल होते हैं। लेकिन उसकी पहचान आपके आँख से, नाक से, मुँह से, हर एक चीज़ से हो सकती है कि यह plastic का फूल है या कि सच्ची फूल है। लेकिन धर्म को जानने के लिए सिर्फ vibrations चाहिए। उसके बगैर आप जान ही नहीं सकेंगे कि यह आदमी पाखण्डी है, कि झूठा है, कि अधर्मी है, यह राक्षस है। यह आदमी धर्मात्मा है और यह आदमी परमात्मा है, यह आदमी अवतार है। यह आदमी बहुत बड़ी शक्ति है। जब तक आपके हाथ में vibrations नहीं आएंगे आप जान नहीं सकते। इसीलिए यह चीज़ सबसे पहले आपको पा लेना

चाहिए कि असली vibrations आपके हाथ से ठंडे-ठंडे आने चाहिए जैसे कि कोई cooler से आ रहे हों, इस प्रकार आपके अन्दर से आने चाहिए। इसके अलावा आपके विचार आपके काबू में आ जाते हैं, आप निर्विचार हो जाते हैं, और विचारों की ओर देखते हैं कि आप निर्विचार हो गए, कोई भी विचार नहीं आ रहा है। यह असलियत है, यह सत्य है। इसमें मैं कोई झूठा वादा नहीं कर सकती। मेरे हाथ का कोई झूठा recommendation नहीं है। इसमें कोई झूठी बात नहीं हो सकती। जब तक आप पार नहीं होंगे तब तक आप मेरे कुछ नहीं लगते चाहे मेरे कुछ भी लगते हों। कोई कितना भी रुपया दे मैं पार नहीं कर सकती चाहे आप कितने भी पढ़े लिखे हों मैं पार नहीं कर सकती। आप घर में बैठिए। आप तभी पार हो सकते हैं जब हो सकते हैं, जब हो गए हों। कोई भी हों आप, मैं मजबूर हूँ। मैं आपको ऐसा झूठा certificate नहीं दे सकती। इसमें झूठ

नहीं चल सकता, किसी भी तरह का झूठ नहीं चल सकता इसमें। यह सच्चाई होनी चाहिए। आपको खुद अनुभव होना चाहिए। आपके अन्दर दिखाई देना चाहिए और आपके हाथ से इसका बहता हुआ प्रवाह से दूसरों को भी जागृत करना चाहिए। तभी आप पार हुए हैं। हाँ मैं आपको धो पोंछ के साफ कर दूंगी, आपको प्यार से साफ कर दूंगी, आपकी कुण्डलिनी को समझा दूंगी, सब कुछ कर दूंगी, लेकिन यह होना पड़ेगा। जिनके नहीं होता है वह दुनियाभर का पाखण्ड रचते हैं और दुनिया भर की चीजें करते हैं और बातें बनाते हैं। उसकी मुझे परवाह नहीं है। लेकिन तुम लोग भी उसकी परवाह न करो और अपना ही कल्याण साधो, अपना मंगल साधो। अपने को सत्य के रास्ते में रखो। चाहे दो चार लोग कम हों या चाहे हजार लोग ज्यादा हों। इससे फर्क नहीं पड़ता। हम लोग अब ध्यान में जाएंगे। सब लोग इस प्रकार हाथ रखें। आँखें अभी शुरू में बंद रखें ..... ।